D-II

Short notes on Raga Patdeep.

- इस राग की उत्पत्ति काफी थाट से मानी गई है।
- यह ओडव- सम्पूर्ण जाति का राग है।
- इसका वादी स्वर पंचम है।
- इसका संवादी स्वर षड्ज है।
- इसमें केवल गंधार स्वर कोमल तथा बाकी स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते हैं।
- इसका गायन समय दिन का तीसरा प्रहर है।

आरोह- ऩि सा ग़ म प नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग़ रे सा

- इसकी रचना भीमपलासी के कोमल नि को शुद्ध करने से हुई है।
- ~~मध्य सप्तक~~ अवरोह में कभी-कभी निषाद को छोड़ दिया जाता है।
- इसमें ध म की संगति की बहुतायत है।
- पूर्व राग होते हुए भी यह उत्तरांग में अधिक स्पष्ट होता है।
- न्यास के स्वर - सा, प और नि
- समप्रकृति राग - भीमपलासी